साहित्य का सामाजिक पक्ष

श्यामसुन्दर दुबे

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य का सामाजिक पक्ष

श्यामसुंदर दुबे

ग्रंथलोक
दिल्ली-32

Scanned with OKEN Scanner

© लेखक

ग्रंथलोक
10296, लेन नं. 1, नवदुर्गा मन्दिर के पास
वैस्ट गोरखपार्क, शाहदरा
दिल्ली-110032
फोन : 65829441, 9868472675

ISBN : 978-81-88567-44-7

मूल्य : 300.00 रुपए
प्रथम संस्करण : 2008
मुद्रक : क्वालिटी ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

आमुख 7

समीक्षा का समाज

समकालीन समीक्षा के सामाजिक सरोकार 13
आलोचना की सामाजिकता 19
मौत के खेल में समीक्षा की हिकमत और हुरमत 25
सामाजिक निष्पत्तियों का साहित्य 30
अपनी दुनिया को इस खिड़की से देखें 33
यह विश्व ज़मीन के टुकड़ों का योगफल नहीं है 38
कविता, कला और किस्सागोई 45
कथाकार का सामाजिक चिंतन 47
रस-विमर्श का पुर्नपाठ 52
नैतिकतावादी दृष्टिकोण की पहल 56
साहित्य के इतिहास में लोक का हस्तक्षेप 60
सामाजिक अंतर्क्रियाएँ और साहित्य 65
शब्द का अवमूल्यन 69
सनातन का स्मरण 72
समय की ललित चेतना के रचनाकार 75
आधुनिकता की आधारभूमि परंपरा 79

कविता का समाज

कविता में समाज 85
कविता की संप्रेषणीयता 88

Scanned with OKEN Scanner

कविता : प्रकृति से समाज तक 92
कविता में अपना समय 95
सुख जहाँ सहज है 99
कविता में लोक का भूगोल 103
पेड़ होने का अर्थ 105
गाँव के मन की कविता 108

संस्मरण का समाज

नदी का अभियोग 115
रचना से परे 119
हम अकारथ हो गए जीवन भले पूरा जिए 124
गीत की नदी 127
सागर में त्रिलोचन 130
युग-युग धावित यात्री 134
शब्दों का पारखी 139
वर्षों पुरानी एक याद 143
बरस अठारह साल में लीनौ है बैराग 145
पूनाबाई प्यारी ने गारी बनाई 147
जयहिंद के लिए उठा हाथ 150
उत्तराखंड के घनानंद जगूड़ी 152
बर्तलाई की काशीबाई 154
बिरले सीताराम 156
व्यंग्य की चेतना का प्रथम पुरुष 158
अरी! मौत कुछ और ठहर जा 161

Scanned with OKEN Scanner

ग्रंथलोक

10296 लेन-1, वेस्ट गोरखपार्क
शाहदरा, दिल्ली - 32

Scanned with OKEN Scanner